

ॐ नमः शुकगता नमः ॥ ॥ गंगान्नननिश्चदिमाता
ॐ निसंज्ञा नकोविनी ॥ सप्तशत नृतेन युक्ता शितथूल
ॐ अस्तु नृविनी ॥ १ ॥ शुकगता नमः ॥ शुक
कता नमः ॥ नीलसाद्रा नमः ॥ शुकगता नमः
॥ २ ॥ शुकगता नमः ॥ शुकगता नमः ॥ शुकगता नमः ॥

ॐ स्वस्ति ॥ १ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ अथ
यः नासिकासंस्थितः ॥ २ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ३ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ४ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ५ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ६ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ७ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ८ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ९ ॥

पंचमनासपिंडस्वस्ति ॥ १० ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ ११ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १२ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १३ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १४ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १५ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १६ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १७ ॥
अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १८ ॥ अथ उष्णतपिता ॐ नमो नमः ॥ १९ ॥

नः धनसः मजात थी वृजाः सनानः सिं धूलः गजमकाः त
मजाः हिमनाः ह्यानः न्येवधः ऊर्ध्वः सताः धूपः किं
नतामः ऊर्ध्वः ॥ * ॥ **अकालमृग** * ॥ दक्षिणाः यन
हिमन्यग्वलः दाद हपिलुथ मध्वन कावः थकिं न प्रथ
तिना सपित्र ॥ **ॐ** ॥ **ॐ** ॥ यन कतः दथः प्रत

पिलुङ्गुग्वल थय ॥ नपतः कतः कामलः जात कः बाक
अथ काय कत जाकः नपत जायः लीषत काम
नप्रता जाय ॥ **॥** यन ग्वका जात कत म बाक ॥ अथ
अप्रत पिता अम कता म धमजः पाद सिपिन्त उ
नतार्थः प्रत पिलु ह्यध ॥ **॥** यन मजात थी वृजा

मिग्ववतनः ऊर्ध्वर्त्तना ॥ ५५ ॥ यथा षोडश्विंशत्य
 श्रुत्वा लपतः कृष्णः हामलः तया व वाकः श्रय ॥ ॥
 कृष्णायः वपत जायः श्रिथि अनयायः यनयनग
 वा जानकः कृष्णः हामलः तया व वाक्ययायः श्रयः
 अस्मत्पिताः श्रुत्वा नास चयः श्रिनि चिमाह

नमः कः इत्यनइष माचता यः षादसि पिन्द्र ह्य
॥ १ ॥ अथ अष्टातः पिताः अष्टकनामध्यायः
ः त्रिबुक्तुइः षष्ठाधना यः षादसि पिन्द्र ह्य ॥
॥ २ ॥ अथ अष्टातः पिताः अष्टकनामध्यायः मिश्र
कः पपनदः स्वमाचता यः स्वादसि पिन्द्र ह्य ॥

॥ ३॥ **ॐ** श्रुतः पीताः ॐ मरुतानां धाम यः पुन
नृशतृत्पत्राः वधिजः नृकाजसाधना धिषादसिपि
नृत्वधाम ॥ ४॥ **ॐ** श्रुतः पीताः ॐ मरुतानां धाम यः
ः धिषादसिपि नृकाजसाधना धिषादसिपि
पिन्तुत्वधाम ॥ ५॥ **ॐ** श्रुतः पीताः ॐ मरुतानां

मधाम यः ॥ कृष्णविद्याटः पिदपि वरुजानः तिसाभ
चता धिः धिषादसिपिन्तुत्वधाम ॥ ६॥ **ॐ** श्रुतः पीताः पि
ताः ॐ मरुतानां धाम यः हिन कृष्ण उत्यनृशः खभा
चता धिः धिषादसिपिन्तुत्वधाम ॥ ७॥ **ॐ** श्रुतः पीताः पि
ता ॐ मरुतानां धाम यः इरुगा इरुवपन ह्यनाताः कर्म

निजापि कुन्तः स्व मा च ना थः वा दसि पिन्द्र स्व
धम् ॥ ८ ॥ **अ** अ अ अतः पिता अ म क ना म धम् अ
अ हा म् स्व उ धम् अ न उ त्प न्न इः स्व मा च ना थः ॥
वा दसि पिन्द्र स्व धम् ॥ ९ ॥ **अ** अ अ अतः पिता अ म
क ना म धम् अः अ त्रि म् स्व उ त्प न्नः इ स्व मा च ना

अ थः वा दसि पिन्द्र स्व धम् ॥ १० ॥ **अ** अ अ अतः पिता अ
म ना म धम् अः द सा ना पा त कः कृत त त पा प मा च
ना थः वा दसि पिन्द्र स्व धम् ॥ ११ ॥ **अ** अ अ अतः
पिताः अ म क ना म धम् अः क सि क ता त्प न्नः इ स्व
मा च ना थः वा दसि पिन्द्र स्व धम् ॥ १२ ॥ **अ** अ अः

गताः जन्मताः ॥ ॐ धा द सि पि न्दुः ॥ ५ न
क्रासः दधः धर्मः संधः कृष्ण प्रगिका दयकाः
वधपनयायः वाक्य उध्यः पुजाः उध्यः तुगु ॥
वज्रपातीः नाहापातीः रतपतः यमाता कीः सर्व
सत्त्वकः दधः विजः पाथीनमासिह ॥ वज्रक्रा

तीः रत्नसिद्धः नागमात्रा न के के ती सर्व अशुवली
क्राट धर्म नमासः ॥ ॐ वज्रि कृष्ण नाहा विज
दवमात्र प्रदहकः सर्व सत्त्वक वदः सर्व नाग्य
नतत्यमवता वज्रिः नाहा रत्नः सर्व धर्म पुत्र स
नः यैरुमात्रा न के विजः वज्रवसन सान्य हः ५

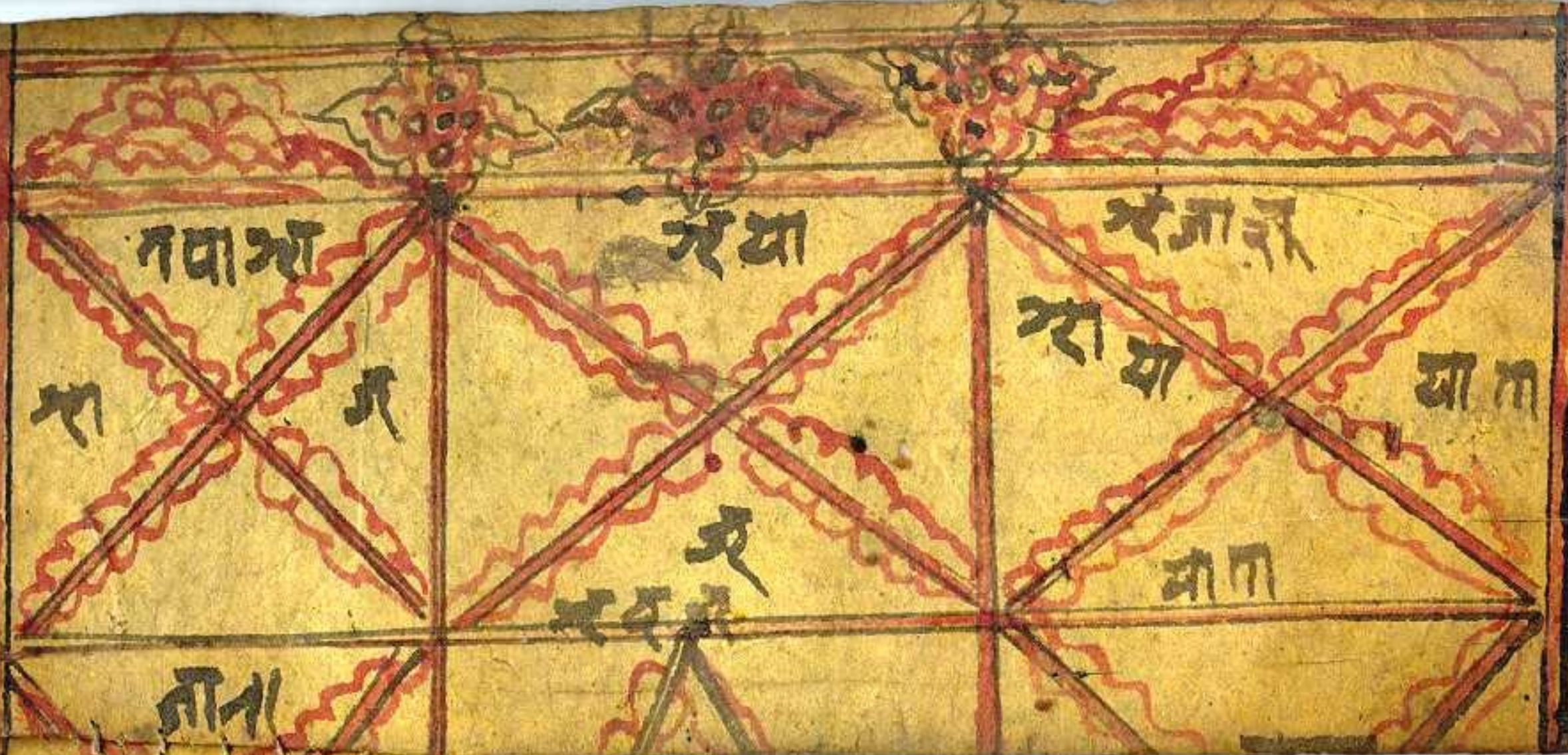
नः द्रुधः धर्मः संघः कुमः पुरिका मता किं गवता
मज्झिमा ॥ २ ॥ यनदव क स ल पुरिः पत य
यः अशाः अजातः तया अजातः अजातमा
तमयः यनाः नाम काय क का थय उजाः यव
थिर हात्रि नाविः जजाः खजाः द कातिता थय

इः यना रक्षति थयथः पत माष्ट जातथ ॥ थ
न अद्रु उ उतः नाम उतः गवन्ति माता मीषा
दति थयाः वृथा नाम विद्या थयः ॥ धून काताः यन
विक्र थय ॥ ॥ पूति धून कावः यना किं गवता न
क धीमाता ॥ यन गति विमः दक्षिना द्यायः अश

ग्रीवाकायः शक्तिवादविषयः सफाकृतः विज्ञानया
यः यः नताः उच्यतेः तन्मतिविषयः उन्मापन
क्रान्तः पिन्द्वायः यस्मिन् सत्त्विकः षष्ठिषाद
सिपिन्दुविधिस्तत्तात्पर्यं ॥ ~~श्रुति~~ ~~स्मृति~~ नमाग्रदृष्टकृत्
अतपिन्दुयथा ॥ नतगुदितकूरः अतः तद्वति

तद्गुरु ॥ शब्दा ॥ मर्चा ॥ अहमप्रथा ॥ विस्वाद्या ॥ क
तिका ॥ अतनरुग्रहयिन्दुयायममवकुवा ॥ या
तत्तांक्रुत्रमइः तंतानरुयः ननकसुअमतिवः प्रिथ
याः मित्राज्जमाः दिवंगतयाः दिततिथीइहासंद
हमइः प्रमातयायममाः मायति ॥ ~~श्रुति~~ ~~स्मृति~~ शब्दादिति

या पिबे य मय्यु को न च दुर मा धा हा॥ को न चा वा
 गदि॥ १॥ अ धा॥ २॥ स ना हि का॥ ३॥ न प न॥ ४॥ व ह प
 न॥ ५॥ प च्च व त्र॥ ६॥ ध न प न॥ ७॥ क लि पु॥ ८॥ का प त क॥ ९॥
 इ श्वो अ॥ न नाः ति नाः॥ सि उ उ व॥ उ म नः॥ ध ना बा क
 ना डिः॥ ध पा अ॥ सा न नः॥ अ न नः॥ ताः॥ धो ता॥ शो



दधुसःभ्रयाभ्रजात्र॥उवसतपाभ्रजात्र॥षवसभ्रजात्र॥दधु
 तलःसास॥भ्रदर॥गलानं॥षादसिधना॥वैतय॥भ्रत॥

२०० नमो भद्राय ॥ सति धने नमः पूजितं केशं सूर्यसुनिर्मलं नारि लज्जता ॥ प्र
 षण्णममदकामसुनासाः नगिशा लं वगनिता नहिना ॥ १ ॥ अरुनवर्णसूत्र
 लसकं श्वकां यनयद्विष्णुदिले नागाः ॥ ५ ॥ अथ चिदात्मा लसकं हृदि सति
 रुद्रविना ननसिद्धा ॥ २ ॥ आर्षगमकटि सति नासाः ॥ ६ ॥ यमस्वर्गनिनी
 लनरा ॥ ७ ॥ धनूजनिनी तसमस्वा ॥ ॥ ८ ॥ सति धसर्गति
 नमः सुधाष-हिगुलिवत नस नकासु डीक्षाः विष्णुविष्णुतिमा नसुदना ॥ ९ ॥
 नसदीपा ॥ १० ॥ अगसुवा सुसंकिण्णवः सिद्धहृत्तमगनाडुभायीना कस्यन
 स्वदुविभुतिमवर्ण ॥ ॥ ११ ॥ सति ॥ १२ ॥ गच्छति निनयत्वा मीयति नागा

गतापविष्णिता रथाः ॥ १३ ॥ वकमा ॥ गता सति निद्रा ॥ १४ ॥ सति ॥ १५ ॥
 मकुमलकानकासुवाका नरुमी मन्त्रिग आर्षगयानिः ॥ १६ ॥ मलमंक्र
 विष्णुदितया दो ॥ १७ ॥ सति ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ अककमानवपासिकुमा नालरुनेवि
 तसः ॥ २० ॥ सती नालाकदिता मगता ननविना ॥ २१ ॥ सति ॥ २२ ॥ अमलसामल
 यदुगाडुमा नयनाडुयारिमसतिनः सर्ववृत्ताकनलीकविष्णुहो ॥ २३ ॥ वद
 ॥ २४ ॥ मनिवादी ॥ ॥ २५ ॥ नमो भद्राय नमो भद्राय नमो भद्राय नमो भद्राय
 नमो ॥ २६ ॥ नमो भद्राय नमो भद्राय नमो भद्राय नमो भद्राय नमो भद्राय

ॐ यत्ते सः श्रुतमविकृतं किं नो मि संवादि मा खन ए सि गणयानि कु स-
नया गिदि प्रकृ॥ १ ॥ रु वि त दू वि त व रु रु न्नी सा ख दं ष ड वि प्र क

ॐ उ दा ता त ल उ क नि नू धू ता वि दू छि ता ए ख ना या द
ग धा शि ति ती लि या गि ना के म हि वि र व धा ना वि ता व
ध स्था न ल सा वि ना वि व र र वा स्था न न्द मं दा हा ना म ता व वि
श ति ना वि ल हि ता श्र व रु वा ना हि का या रु त वा ॥ ॐ न म ८

श्र व रु स व ना य ८ ॥ स्म ना ह न रु मा सा व धाः श्र व रु वा दि रु स
मि ता श्र म त व रु दा य रा कि नि य रु न व न व रु रु ना ती रि का मा
य रा ना य रु ग त न म ॥ यौ श्र ता व रु रा नि रु न हं क ल्य व ध ना
लो को क रं य व मी न्मः ता श्र ति ए न म स द धा न स ए ता श्र
ध ८ ॥ सर्व धं मा ना स ए व रु ६ र्दं ८ ॥ न्म ता रु ना न व रु स ए ता
उ म त म क र्दं ॥ स ति णि स न्य ता न त ल र्दं व रु श्र ता ग व तं कु र्द
मा नि धा श्र स न स हि तं म हा ते ल व का नि ना रा न मा नं द वा ली

गि तहडा त्या ॥ वडा वडा ॥ धन अथ लहडा त्या गडा यमा वल धन
ति मरडा त्या रमन खग मरु थरडा त्या प्रथम वा ॥ पयम रडा
त्या कति कया न स व मरडा त्या ॥ १३ न वरु मरु मि ति दूद स
रुडा मरु मरु मि ति ति न तुं रुडा मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
नो यं क रं मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
विकृ मरु न नद वरु कठ रि रव नं १२ गी ना दि र्मा ल मरु ति कं वरु

लरु मरु नि वरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
को ररु क क ल शि मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
नि मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
रि मरु दि कं मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
रि मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
क क या ल मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु

श्रीकृष्णवक्त्रा॥ घ्राणाया ॐ व्यावक्त्रा॥ वक्रुना गवक्त्रा॥ मय्यमाकृ मवक्त्रा म
वामागनिधु ॐ अक्त्रा॥ ॥ यथिविधमृपातनि॥ आवधमृमालनि
॥ तर्माधमृना कृत्वनि॥ वामधमृप्रमृन मृवृन॥ ॥ आकासधमृ
मृपमृप्रमृनि निरुवमृधमृत्वयगनि मृसदहा कृताविधुनि
॥ कृका - लका मृमाकृध॥ शावक्त्रा लकरहा लका मृकृ
अ॥ कृवक्त्रा यावृमना मृधमृगि कृवाहा॥ ॥ पाधमृधमृ
मृात॥ ॐ शावक्त्रा मृरकृदं कृट॥ ॐ मृकि मृक्री॥ मृदं

कृट॥ ॐ वक्त्रा वे मृरुति मृदं कृट॥ ॐ मृवृशकि नि मृदं कृट वक्त्रा
मृरुति मृदं कृट॥ ॐ शाकि मृदं कृट॥ वामा नि
मृदं कृट॥ ॐ खड्गना मृदं कृट॥ ॐ रविनि मृदं कृट॥
ॐ वक्त्रा कनाट कृदं कृट ॐ मम मृकनाट कृदं कृट ॐ
विमम मृकलाट कृदं कृट॥ ॐ मम मृविमम मृकलाट कृदं कृट
॥ ॥ ॐ कलशमृमृदं कृट॥ ॥ ॐ कृलशमृमृदं कृट॥

५॥ ॐ व ध र व ता म गि म द्दं ॐ ॥ ॐ म र म हा ना स म द्दं ॐ ॥ ॐ
 क्रा र म र विल म गि म द्दं ॐ ॥ ॐ क्रा र ख र्व नी म द्दं ॐ ॥ ॐ क्रा र व क
 म नी म द्दं ॐ ॥ ॐ क्रा र म म हा न म द्दं ॐ ॥ ॥ ॥ ॐ क्रा र ने ना
 व ति म द्दं ॐ ॥ ॐ प ह र म हा ते न वि म द्दं ॐ ॥ ॐ व य र वा म व
 ण द्दं ॐ ॥ ॐ र क र वे स र धि ना क मा ना व ल वि न्म र स ना र
 य द्दं ॐ ॥ ॐ ग क र स व त वा ता न ग त ह र ग स र्व वा त म्म य र
 ग म्मा मा द वि म द्दं ॐ ॥ ॐ श क र ह र स र द्दं ॐ ॥ ६॥ वा ॥ ॥
 ॐ कि नि र म वि न द्दं ॐ ॥

ॐ क्रा र म क व ण द्दं ॐ ॥ ॐ क्रा र ख र्व नी म द्दं ॐ ॥ ॐ क्रा र म नी
 नी म द्दं ॐ ॥ ॐ क्रा र य क व मि नि म द्दं ॐ ॥ ॐ धि जि र म हा वि
 म द्दं ॐ ॥ ॥ का य ॥ ॐ का का म द्दं ॐ ॥ ॐ उ का म
 द्दं ॐ ॥ ॐ म्मा ना म द्दं ॐ ॥ ॐ स क जा म द्दं ॐ ॥ ॐ म ग
 कि नि म द्दं ॐ ॥ ॐ म दू त म द्दं ॐ ॥ ॐ य म दू त नि म द्दं
 द्दं ॥ ॐ म म र थ नी म द्दं ॐ ॥ ॐ र ड न ग म द्दं ॐ ॥ ॐ
 ॐ श क ना म द्दं ॥ ॐ श ना क ना म द्दं ॐ ॥ ॐ क न र व ति र व ना म द्दं

[illegible]

ॐ नमः सर्वज्ञं ॥ यमवज्रं ॥ ॐ धर्मवज्रं ॥ ॥ नमः स्कंदे न
मामिदं नमो नमः स्वाहा वज्र स्वाहा धनुः ॥ ॥ स्तुति सर्वज्ञ
नमः स्वाहा वज्र दथ वसादकं चिकामनित्रिकाद्रुत
॥ स्वयं नमो नमः ॥ ॐ नमः ॥ नमो वज्र वीज
सा प्रदं १ रुद्र ॥ ॐ महाकल्याणि सन्निहा प्रदं २ ॥ ॐ नमः

मकुण्डलवप्रक्षररुद्राकुण्डलकनालागतीधनमूखाप्रक्षररु
द्राकुण्डलसतुङ्गणस्वनायप्रक्षररुद्रा॥यत्रश्रुयासोद्यतमख
दीगमनिमक्षररुद्राकुण्डलश्रीनाम्नवाधनायप्रक्षररुद्रा॥कु
मसाधूसाधकाचवयूषामक्षररुद्रा॥॥०॥लातिमाग॥म
द्विनिश्रुन्मगानननवप्रयत्नंरुद्रासुनिर्मितविश्ववज्रवस्त
तुकाप्रयविक्काङ्गमयत्रवसुवज्रुर्वाचुवज्रुस्माचनम
नितसापाहसाचसंसातकिंकिनिजालतुवितखचिह्नि

वज्रवस्तुकाचनिर्झरसंधिषूकुसुम्हमहवज्रकर्मसिख
तुयकुनिधमपतावसंसातकामवादिवितुषित॥तद
विषकाचवचिनतंविश्वपद्ममवदलकुम्हिकोकाशजानि
ततद्वयनिशालिकालिदिशततरुद्रसूर्योममूलंतस्याव
विश्रधवाधममूलसुशाहचुकसमासुलेयवित्ताकात
सर्वज्ञानसत्वादितिगङ्गतमाययस्मित॥वाचनादिवि
द्यासहितयचुगधुयताकावमुवादिगङ्गातन्मयवृषाकुं

मादिति ४ कलकि ७ लमावक्की गावाधि विर्लमता पूर्वकल ४
शिवपद्मानि सत्यमति सिंहा मानं वृषवडादिदि ४ चूवनी
यमानमंगलगीतिरि ४ अतिषकमहावडी गिधमरु कं
नमस्कृतददामि सर्ववृद्धानां गिगु आलयसमूहव
४॥ ॐ सर्वतथागतसमय शिष्य ॥ ॐ दनं सर्ववृद्धानां
गिधमरु कनेमस्कृतं यथा कंदूजनाथं यमकूटपर्वक

लातवां सर्ववर्द्धं ग्रामनाम कूटपु गि विष्णु सा ॥ मकन
पमा ॥ का ॐ वज्रधगत श्वचि अति विष्णु ॥ ॐ सत्ववडी
अति विष्णु ॥ ॐ सत्ववडी अति विष्णु ॥ ॐ धर्मवडी विष्णु
॥ ॐ कर्मवडी अति विष्णु ॥ ॐ उदकम कूटवडा धनुनामा
ति विष्णु काय विष्णु ॥ ॐ वरुण रक्षा च कायवडा पय्यं